बच्चो कि शिक्षा पर अभिभावको एवं अध्यापको कि कुशलता का प्रभाव का एक अध्ययन

[1]डॉ. शिवकांत शर्मा और [2]शिवोतम राव
[1]सहायक प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी, झुंझुनू-333515, राजस्थान (भारत)
[2]राजनैतिक विज्ञान विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी, झुंझुनू-333515, राजस्थान (भारत)
Email- shivottamrao@gmail.com

सार: बच्चों के विकास में अभिभावक की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। इस भूमिका के निर्वाह में स्कूलों के साथ उनका अच्छा तालमेल और समन्वय वाला रिश्ता होना जरूरी है। ऐसा करने के लिए ऐसे फोरम की जरूरत है जहाँ शिक्षक, अभिभावक और बच्चे एक साथ मौजूद हों। विद्यालय एक ऐसी जगह है जहाँ हर समुदाय से बच्चे आते हैं और औपचारिक शिक्षा ग्रहण करते हैं, जिससे वो अपने समुदाय की संस्कृति और काम को सीखते हुए जोड़ते हैं। इस यात्रा में बच्चे अपनी विभिन्न क्षेत्रों की दक्षता में सतत सुधार करते हुए सीखते हैं। पारंपरिक स्कूली शिक्षा की तरह यहां आपको अपने बच्चे की प्रगति जानने के लिए अभिभावक-शिक्षक बैठक की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के द्वारा शिक्षक मिनटों में माता-पिता को अपडेट दे सकते हैं। आप अपने बच्चे के परीक्षा में प्रदर्शन, मूल्यांकन और क्रियाकलापों के बारे में शिक्षक से तुरंत प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन लर्निंग मॉड अभिभावक-शिक्षक के निरंतर बातचीत को सुनिश्चित करता है।

बच्चों में जीवन जीने के सलीके में बहुत बदलाव आ गया है। आज का नागरिक अपना जीवन अपने अंदाज में व्यतीत करना चाहता है। इसमें किसी का हस्तक्षेप करना उसे बिल्कुल पसंदन हीं है। इस जीवन जीने की कला में वह अपनी जिम्मेदारियों से बचने का भी प्रयास कर र हा है। इसका प्रतिकूल प्रभाव परिवार और समाज पर पड़ रहा है। हमें विशेषकर अभिभावकों ओर शिक्षकों का मार्गदर्शन बच्चों के जीवन जीने की शैली को बहुत हद तक प्रभावित करता है। हमें उनकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाते हुए परिवार ए समाज और राष्ट्र के प्रति उनके दायित्वों के प्रति भी जागरूक करना होगा। ऐसा नहीं करते हैं तो युवा पीढ़ी अपने जीवन और उनके दायित्वों के बारे में जिम्मेदार नहीं हो पाएंगे।

कुंजी शब्द: अभिभावक, शिक्षा, बच्चे

प्रस्तावना: यूनेस्को के अनुसार, "माता-पिता अपने बच्चों के पहले शिक्षक होते हैं"। उनका सहयोग बच्चे की पढ़ाई और विकास को प्रभावित करता है। एक सफल अभिभावक के सहयोग के लिए, आपको शिक्षकों के साथ निरंतर बातचीत करने की आवश्यकता होती है। चूंकि बच्चे की शिक्षा और सम्पूर्ण विकास महत्वपूर्ण है, तो ऐसे में एक मजबूत साझेदारी के अलावा कुछ भी मायने नहीं रखता है। माता-पिता और शिक्षक दोनों अपने अवरोधों को दूर करते हैं और एक साझा लक्ष्य की दिशा में काम करने के लिए तैयार रहते हैं। एक नये शिक्षा प्रणाली को अपनाने के साथ-साथ आप आसानी से शिक्षकों के साथ बातचीत कर सकते हैं। एनईपी 2020 को धन्यवाद, जल्द ही एडटेक व्यवसाय के तेजी से बढ़ने की उम्मीद है, जो एक मजबूत शिक्षा प्रणाली का मार्ग प्रशस्त करता है और अधिक डिजिटल संचार तंत्र प्रदान करता है। बच्चों में जीवन जीने के सलीके में बहुत बदलाव आ गया है। आज का नागरिक अपना जीवन अपने अंदाज में व्यतीत करना चाहता है। इसमें किसी का हस्तक्षेप करना उसे बिल्कुल पसंद नहीं है। इस जीवन जीने की कला में वह अपनी जिम्मेदारियों से बचने का भी प्रयास कर रहा है। इसका प्रतिकूल प्रभाव परिवार और समाज पर पड़ रहा है। हमें विशेषकर अभिभावकों ओर शिक्षकों का मार्गदर्शन बच्चों के जीवन जीने की शैली को बहुत हद तक प्रभावित करता है। हमें उनकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाते हुए परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति उनके दायित्वों के प्रति भी जागरूक करना होगा। ऐसा नहीं करते हैं तो युवा पीढ़ी अपने जीवन और उनके दायित्वों के बारे में जिम्मेदार नहीं हो पाएंगे।

संस्कारों का रहता है असर : आज के विद्यार्थियों के जीवन की शैली में जो परिवर्तन आया है वह सबसे अधिक संस्कारों का है। आज का विद्यार्थी मेधावी ए इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी में बहुत अ धिक रुचि रखता है लेकिन सुसंस्कारित नहीं है। अच्छे संस्कारों की कमी के कारण उठना ए बै ठना ए बोलना ए बड़ोंका आदर सत्कार ए माता - पिता ए गुरुजनों के सम्मान में रुचि नहीं रखता। इन सबका कारण माता - पिता के समय अभाव एवं संयुक्त परिवार का कम होना है। प्रत्येक माता पिता यह उम्मीद करते है कि उनका बच्चा बेहतर शिक्षा ग्रहण करे ए अच्छे संस्कार स्कूल में शिक्षक भी सिखाएं

। विषय ज्ञान के लिए विद्यार्थी उत्तरदायित्व हैं लेकिन संस्कारों ए वास्तविक प्रयोगशाला तो घर एवं परिवार हैं जहां बच्चों के व्यवहार एवं संस्कारों का वास्तविक प्रयोग होता है। आज का शिक्षक एवं छात्र दोनों अंकों के खेल में व्यस्त हो गए हैं। उनका एक ही लक्ष्य सर्वाधिक अंक ला कर कुछ बनने का होता है। अध्यापक भी छात्रों के सर्वांगीण विकास के स्थान पर मानसिक विकास पर केंद्रीत होता है। इस भागदौड़ में जीवन के अच्छा नागरिक या अच्छा इंसान बनाने की पहलू अछूते रह जाते हैं। हमारे समय में शिक्षक एक ईश्वर की तरह वास्तविक रूप से पूज्यनीय होते थे। आज इस स्तर में बहुत बदलाव आया हुआ है। इसके लिए हम सभी समा ज के लोग जिम्मेदार हैं। आज अभिभावक शिक्षक पर अपने बच्चों से ज्यादा भरोसा नहीं कर ता पहले शिक्षक की बात पर विश्वास किया जाता था। पहले माता पिता अपने से ज्यादा शि क्षक को बच्चों का शुभचितक मानते थे।

शिक्षा में संचार के महत्व पर कुछ आवश्यक मुख्य बिंदु-

कोई बच्चा उच्च शैक्षणिक उत्कृष्टता स्तर को तभी प्राप्त कर सकता है जब उसे परिवार और स्कूल का पूरा समर्थन मिले। शिक्षक का माता-पिता के संपर्क में होना बच्चे की सफलता के लिए सर्वोपरि है। शिक्षक से प्रतिक्रिया प्राप्त करने से आपको अपने बच्चे के कमजोर क्षेत्रों को समझने और उसमें सुधार लाने में मदद मिलेगी।

परस्पर संवाद पढ़ाई सत्र के दौरान सकारात्मक वातावरण बनाए रखता है।

माता-पिता और शिक्षकों के बीच सकारात्मक संबंध छात्रों के अपने शिक्षकों पर पूर्ण विश्वास को सुनिश्चित करता है और अपने विकास के लिए दोनों पक्षों द्वारा किये जा रहे मेहनत को देखकर छात्र अपने शैक्षणिक लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए अधिक लगन से पढ़ाई करते हैं।

इससे शिक्षकों को अपने छात्र से संबंधित किसी भी मुद्दे पर उनके माता-पिता के साथ संवाद करने में आसानी होती है। छात्र अपनी कमियों के बारे में शिक्षकों और अभिभावकों को पता चल जाने की चिंता करने से भी बच जाते हैं।

अभिभावकों की भूमिका है महत्वपूर्ण

अगर आप भी किसी बच्चे के अभिभावक हैं तो आपको नियमित अंतराल पर स्कूल जाना चाहिए। ताकि बच्चे के बारे में आपको शिक्षक से वास्तविक फीडबैक मिल सकें। बच्चों को भी एक संदेश पहुंचे कि मम्मी-पापा उनकी परवाह करते हैं। इसके लिए स्कूल में आयोजित होने वाली विद्यालय प्रबंधन समिति (एसएमसी) या अभिभाव-शिक्षक बैठक में अपनी सक्रिय भागीदारी जरूर सुनिश्चित करें।

इससे आपको शिक्षकों के नज़रिये से बच्चे की सफलताओं, प्रगति के साथ-साथ चुनौतियों यानि सहयोग के क्षेत्रों की सटीक पहचान हो सकेगी, जिस पर आप काम कर सकते हैं। शिक्षकों की शिकायत होती है कि बहुत से बच्चों के अभिभावक स्कूल में होने वाली बैठकों में हिस्सा नहीं लेते। ऐसे पैरेंट्स को भी प्रेरित करने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। ताकि ऐसी बैठकों को ज्यादा प्रभावशाली, उद्देश्यपूर्ण और उपयोगी बनाया जा सके।

अध्यापक की कुशलता का विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर प्रभाव

विद्यालय एक उपवन है: विद्यालय भी एक उपवन हैं जहां बच्चे उसके फूल हैं। उन फूलों को हम कैसी शिक्षा से पोषण करते हैं यही उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। जब हम बच्चे का सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो वह केवल किताबी ज्ञान में ही बौद्धिक रूप से सफ ल नहीं बना रहे हैं बल्कि व्यक्तित्व और विचारों से भी उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। शिक्षकों को बच्चों के समक्ष उदाहरण बनना होगा। बच्चे माता पिता और साथियों की अ पेक्षा शिक्षकों के विचार और व्यवहार को जल्दी अनुसरण करते हैं। जब जब अभिभावक यह कहता र हेगा कि बच्चों के लिए उनके पास समय नहीं है तब तब बच्चों के प्रति हम अपनी जिम्मेदारी से दू र भाग रहे हैं। ऐसे में बच्चों को उनके दायित्व के प्रति केवल पढ़ाने मात्र से काम नहीं चलेगा। ऐसे बच्चे किशोर अवस्था तथा युवा अवस्था तक पहुंचते पहुंचते वे अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारण नहीं कर पाते जिस कारण उन्हें अपना जीवन नीरस लगने लगता है। ऐसे में हमें बच्चों में पहले मेरा जी वन का अहसास कराना होगा इसके बाद ही वे अपना दायित्व समझ सकेंगे।

विद्यार्थियों की जिम्मेदारी: बच्चों को अपने जीवन के उद्देश्यों के प्रति जागरूक करना चाहिए। शिक्षण संस्थानों में क्लास मोनिटर बनाने के साथ उन्हें जो जिम्मेदारियां सौंपी जाती है उसका कारण उन्हें जिम्मेदारी बोध कराना है। यही कारण है कि विभिन्न सदनों के माध्यम से बच्चों को कई प्रभार सौं पे जाते हैं। हम सभी शिक्षकों का कर्तव्य बनता है कि समाज व विद्यालय के हर बच्चे को सुसं

स्कृत एवं संस्कारी बनाने का प्रयास करें जिससे वह देश व समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बन सके। अनुशासन प्रेम एवं वात्सल्य के साथ दी गई शिक्षा ही विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक बना सकती है

लगातार करते रहें प्रेरित: बच्चों को शुरू से ही उनकी जिम्मेदारियों के प्रति प्रेरित करना चाहिए। इसकी शुरूआत घर से की जानी चाहिए। घर के छोटी छोटी जिम्मेदारियां सौंपनी चाहिए जैसे पढ़ाई से फुर्सत के दौरान छोटे मोटे सामान लाने के लिए बाजार जाने, घर में मेहमान आते हैं तो जल पान आदि परोसने, माता पिता के साथ बागवानी में हाथ बंटाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे बड़े होने पर वे अपनी जिम्मेदारी समझ सकेंगे। इससे उनमें घर व्यवहार की समझ विकसित होगी। इस दौरान गलती होने पर उन्हें डांटने के बजाय समझाते हुए प्रेरित करना चाहिए। कई बार अभिभावक बच्चों को नालायक या बिल्कुल ही नाकारा मानने लगते हैं। इससे बच्चों के मानस पटल पर गलत प्रभाव पड़ता है। हमें इससे बचना चाहिए। बच्चे गलती करें तो भी उनके काम की तारीफ करते हुए उनकी खामियों को बताना चाहिए ताकि वे अगली बार उन गलतियों को नहीं दोहराएं। बच्चों को अपना जीवन जीने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हमारा दायित्व केवल उन्हें मार्गदर्शन करने का होना चाहिए।

एक आदर्श जगत में, सभी छात्र हर वर्ष सीखने के अच्छे लाभ प्राप्त करेंगे, जिसके लिए उन्हें शिक्षा के नवीनतम सिद्धांतों के बारे में जानने वाले उन शिक्षकों से मदद मिलेगी जो इन सिद्धांतों को हर छात्र की अलग जरूरतों पर लागू करने के तरीकों से अवगत होंगे। शिक्षक यह काम विद्यालय द्वारा प्रदान किए गए संसाधनों से संपन्न कर सकेंगे और वह भी तब जबकि उनके जीवन में अन्यत्र चाहे जो घट रहा होगा।

तथापि, हम एक आदर्श जगत में नहीं रहते हैं। शिक्षक भी मनुष्य होते हैं जो कभी-कभी अपना कार्य उत्कृष्टता से नहीं दर्शा पाते, यदि यह बात उन्हें पता हो, तो सुधार करने के लिए उन्हें शायद जरा सी ही सहायता की जरूरत पड़ेगी – लेकिन समस्या तब होती है जब शिक्षक को पता नहीं चलता कि वे बेहतर कर सकते हैं और छात्रों की सीखने की प्रक्रिया शिथिल हो रही है। यह एक संवेदनशील मुद्दा है जिसे सावधानी से संभालने की जरूरत है, लेकिन यह अच्छे विद्यालय नेता की भूमिका और दायित्व का हिस्सा है।

इस इकाई में आप सीखेंगे कि शिक्षक के काम के बारे में प्रमाण कैसे एकत्र किया जाता है और नियोजन से समर्थित विकास गतिविधियों का उपयोग करते हुए उसे सुधारने की कुछ अवधारणाओं का अन्वेषण करेंगे। आपके शिक्षक छात्रों की उपलब्धि के सबसे बड़े निर्धारक हैं और इसीलिए शिक्षकके काम को प्रोत्साहित करने में आपका प्रभाव छात्रों कीसीखने की प्रक्रिया और नतीजों को प्रत्यक्षरूप से प्रभावित करेगा। एक विद्यालय नेताके रूप में आप शिक्षकों को अपने कार्य प्रदर्शन को बेहतर करने में सहायता देकर उन्हें अधिक प्रभावी होने में सक्षम कर सकते हैं।

आपके शिक्षक में स्पष्ट शक्तियाँ हो सकती हैं लेकिन ऐसे क्षेत्र भी हो सकते हैं जहाँ वेसुधार कर सकते हैं। शिक्षकों के अच्छे कार्य प्रदर्शन को पहचानना और अभिस्वीकृत करना महत्वपूर्ण होता है इस बात को विशिष्ट रूप से संबोधित करने के लिए इस इकाई में आगे चलकर आप एक गतिविधि करेंगे। तथापि, सबसे पहले हमें कार्य प्रदर्शन में कमी से निपटने पर ध्यान देना है। यह वह क्षेत्र है जिस पर शिक्षक उन कौशलों, ज्ञान और और व्यवहारों के सभी प्रकारों का उपयोग नहीं करते हैं जो एक उत्कृष्ट शिक्षक होने से संबद्ध होते हैं।

निष्कर्ष

यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि शिक्षक का खराब कार्य प्रदर्शन आवश्यक रूप से इस बात से संबंधित नहीं होता कि शिक्षक अपने अध्यापन को या अपनी कक्षा को अन्य लोगों से अलग ढंग से संयोजित करता है या नहीं। अधिकतर इसका कारण यह होता है कि अध्यापन के परिणामस्वरूप उनके छात्र उतनी प्रगति नहीं करते हैं जिसकी उनसे उस समय सामान्य तौर पर अपेक्षा की जाती

है। ऐसा भी हो सकता है कि सक्षम छात्र या मिसाल के तौर पर, किसी विशिष्ट सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के छात्र अच्छा काम करते हैं, जबकि अन्य नहीं।

यदि आप कक्षाओं में जाकर या शिक्षकों से बातचीत करके छात्रों की सीखने की प्रक्रिया पर नियमित रूप से डेटा एकत्र नहीं करते हैं, तो हो सकता है कि छात्रों की शिक्षा के बुरी तरह से हानिग्रस्त होने से पहले आपको कार्य प्रदर्शन में इस कमी का पता न चले। इस वजह से, नियमित निगरानी करना आवश्यक होता है और उसे आपके रोजमर्रा के काम का हिस्सा होना चाहिए। निगरानी करके आप अच्छे कार्य प्रदर्शन की पहचान और अच्छा काम कर रहे शिक्षकों को मान्यता भी प्रदान कर सकेंगे। आप कार्य प्रदर्शन का प्रमाण कैसे एकत्र कर सकते हैं? यह बहुत महत्वपूर्ण है कि प्रमाण के आधार पर कार्यवाही की जाये न कि कहानियों या अनुमानों के आधार पर। तथापि, आम तौर पर कोई मुद्दा अन्य शिक्षकों और उनके कार्य की तुलना में उठाया जाता है, इसलिए एक से अधिक शिक्षकों या कक्षा के बारे में प्रमाण एकत्र करना अक्सर जरूरी होता है।

संदर्भ:

1. डी, कोर.(2016). जम्मू डीविजन के विद्यार्थियों के व्यावसायिक एवं शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू.

2. डगलस, डी. रेडडी. (2013). शैक्षिक एवं विद्यालयी संरचना का अध्ययन. शिक्षक - महाविद्यालय अभिलेख 106 (20) अक्टूबर 2004 पेज 1989-2014.

3. डी,कॉक.(2014). माध्यमिक शिक्षा में नवीन अधिनगम और अधिगम वातावरणों का अध्ययन, रिव्यु ऑफ़ एज्युकेशन रिसर्च 74(2) सित. 2004 पेज 141-170.

4. डेविस,(2015). अध्यापकों के चयन में केन्द्रीय स्थिति का निर्णय और विद्यालयी अकादमिक उपलब्धि का अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, केलीफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, फ्रेस्नो.

5. दास, एन.(2014). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अकादमिक एवं सामाजिक स्तर का अध्ययन. उत्कल विश्वविद्यालय, भुनेश्वर.

6. दास, एटिना.(2015). माध्यमिक विद्यालयी वातावरण में विद्यार्थियों का मत, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, रॉवन विश्वविद्यालय, रॉवन।

7. दीप्ति भारद्वाज (2017) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर विद्यालयी वातावरण, दूरदर्शन कार्यक्रम एवं पारिवारिक संस्कारों के प्रभाव का अध्ययन, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, मान्य विश्वविद्यालया, सरदारशहर प्रकाशित छवि नेशनल जर्नल ऑफ़ हायर एज्युकेशन, वर्ष - एक, निर्गमन - चार, जुलाई - सितम्बर 2013, पेज - 12-16

8. गुड, बार. स्केट्स. (2014). मेथडोलाजी ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च न्यूयार्कः सेन्चुरी कम्पनी. न्यूयार्क.

9. गाँधी, के. ए. (2015). संगठनात्मक विरोध और विद्यालयों के परिणामों पर प्रबंधन व्यवस्था का प्रभाव, शिक्षा में प्रयोग वोल्यूमगग 111(4) 67-74.

10. घालप. (2016). दादर और नागर हवेली संघीय क्षेत्रों में विद्यालयी बच्चों के लिए छात्रावास सुविधाओं का मूल्यांकन शोध अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

11. एच, उर्मिला. (2011). गुजरात राज्य के माध्यमिक विद्यालयों में दृश्य – श्रव्य सामग्री का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, जामनगर.

12. हींगड, सुरेखा. (2016). माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

13. ज्ञानी, टी. सी.(2012). विद्यार्थियों और विश्वविद्यालयी (विद्या संबंधी) उपलब्धियों पर कक्षा कक्ष वातावरण (जलवायु) अध्यापकों के नायकत्व व्यवहार और आशाओं का प्रभाव इण्डियन एज्यूकेशनल रिव्यू, वोल्यूम 34 (2) 99-104.